चासिक हाल

(कुड़मालि एकांकी नाटक)

ललित मोहन महतो



कुड़मालि अनुवाद

डॉ. वृंदावन महतो

BVP - 1989
19/3/18

12/13

चासिक हाल

(कुड़मालि एकांकी नाटक)

नाटककार

ललित मोहन महतो

अनुवाद

डॉ. वृंदावन महतो

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन

रांची (झारखण्ड)

Chasik Hal
Kurmali short play by Lalit Mohan Mahato
Translated by Dr. Brindavan Mahto

■
नाटककार
ललित मोहन महतो
ग्राम-पोस्ट: पुखुरिया, भाया-झाड़ग्राम, मेदिनीपुर (पश्चिम बंगाल)

■
अनुवाद
डॉ. वृंदावन महतो

■
प्रथम संस्करण : आखाइन जातरा, 15 जनवरी 2009

■
सहयोग राशि : 50 रुपये मात्र

■
प्रकाशक
प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातु, रांची-834009 झारखण्ड
दूरभाष : 9234301671 ई-मेल : pkfjharkhand@gmail.com
वेब पता : www.kharia.in

■
शब्द-संयोजन : संतोष कुमार

■
मुद्रक : झारखंड प्रेस, 76 चर्च रोड, रांची

■
आवरण/रूपांकण : आधार अल्टरनेटिव मीडिया (आम) 9234301671

दो शब्द

किसी भी समाज का दर्पण उसका साहित्य होता है। विकसित साहित्य विकसित समाज की पहचान है। कुड़मालि साहित्य के मामले में लेकिन ऐसा नहीं है। कुड़मालि समाज जितना विकसित है, उसकी अपेक्षा उसका साहित्य अत्यंत पिछड़ा है। अन्य झारखंडी भाषाओं के लिहाज से भी कुड़मालि साहित्य के विकास की गति धीमी है। इस तरह देखें तो साहित्य और शैक्षिक पाठ्यक्रम, दोनों ही दृष्टियों से कुड़मालि में पठन सामग्री का घोर अभाव है। आधुनिक नाटक और रंगमंच के मामले में भी कुड़मालि की यही स्थिति है।

भारतीय दर्शन में नाटक को पांचवां वेद माना गया है। पाश्चात्य दर्शन में भी नाटक एवं रंगमंच को ऐसी ही प्रतिष्ठा हासिल है और नाटक को 'व्यस्कों का विद्यालय' कहा गया है। झारखण्ड में नाटक और रंगमंच की परंपरा लोकनाट्य से शुरू होती है। लोकनाट्य की दृष्टि से कुड़मालि समाज अत्यंत समृद्ध रहा है। झारखण्ड का एकमात्र विश्वप्रसिद्ध लोकनाट्य 'छऊ' कुड़मालि क्षेत्र की ही सांस्कृतिक विरासत है। एक अत्यंत समृद्धशाली लोकनाट्य परंपरा रहने के बावजूद कुड़मालि में नाटक एवं रंगमंच की आधुनिक परंपरा विकसित नहीं हो पायी है। हालांकि पर्व-त्यौहारों एवं अन्य सांस्कृतिक-सामाजिक अवसरों पर नाटक-एकांकी लगातार खेले जाते रहे हैं, पर शिष्ट नाट्य सहित्य के रूप में उसकी उपस्थिति नगण्य बनी हुई है। देखा जाय तो लिखित अथवा शिष्ट नाटकों का प्रादुर्भाव संभवतः 1980-82 से ही प्रारंभ होता है।

'चासिक हाल' श्री ललित मोहन महतो का बहुचर्चित कुड़मालि एकांकी है। इस कुड़मालि एकांकी का प्रथम प्रकाशन चन्द्रलेखा प्रकाशनी, झाड़ग्राम (पश्चिम बंगाल) से 1987 में हुआ था। बंगला लिपि में। इसलिए झारखण्ड का कुड़मालि समाज इससे अपरिचित रहा, जबकि प्रकाशन के तुरंत बाद पश्चिम बंगाल में हुए इसके नाट्यमंचनों ने अपार लोकप्रियता बटोरी थी।

प्रस्तुत एकांकी नाट्य कुड़मालि समाज की व्यथा-कथा को अत्यंत सटीक ढंग से पाठकों-दर्शकों के समक्ष रखती है। 'चासिक हाल' एक सामाजिक नाटक है और इसमें कुड़मी (जो कि मुख्यत: खेतीहर अथवा कृषक समाज है) समाज के जीवन संघर्ष को बखूबी चित्रित किया गया है। वस्तुत: यह भारत के आम किसानों की कहानी है जो कड़े परिश्रम के बावजूद अभिशप्त जिंदगी जीने को विवश हैं।

इस सुविख्यात एकांकी को देवनागरी लिपि में प्रस्तुत करने का मकसद सिर्फ इतना है कि झारखण्ड का कुड़मालि समाज इस लोकप्रिय नाट्यकृति से अपरिचित नहीं रहे तथा वह भी इसका आस्वाद ले। कुड़मालि का शिष्ट साहित्य इस अनुपम नाट्यरचना से समृद्ध हो तथा साहित्यिक विकास को गति मिले। झारखण्ड के कुड़मालि समाज के अनुरूप 'चासिक हाल' की देवनागरी प्रस्तुति एवं अनुवाद में कुछ परिवर्तन अवश्य किया गया है, परंतु मूल नाट्यकृति ज्यों कि त्यों रहे, इस रचनाधर्म का पूरा निर्वाह हुआ है।

विश्वास है, पश्चिम बंगाल की तरह ही झारखण्ड में भी यह नाट्य रचना पाठकों-दर्शकों को पसंद आयेगी तथा इससे कुड़मालि नाट्य साहित्य और समृद्ध होगा। पाठकीय आलोचना एवं सुझावों का स्वागत है।

वृंदावन महतो

नाटकेक चरितरआ

बेटाछ्उआक तेतें पात्र

राघव	:- एकटा चासि
हारू	:- राघबेक बेटा
महेंद्र	:- राघबेक दामाद
कंका	:- महेंद्र कर संगि
बिराम	:- पासा-पासिक चासि
चुना	:- चारउआहा
रमेश, बिन्दा,	
मकरा	:- हारूक संगि
महना	:- डम

बेटिछ्उआक तेतें पात्र

पुंटिबाला	:- राघबेक बहु
टुनि	:- बेटि
डमनि	:- बेनिहर
कालिदासि	:- महनाक बहु

एड़ि हुलकन (पेहिला दिरिस)

(राघव माहतअक घार)

खुखड़ि डाक हेल आहेइक। गाछे-पाते कउआ, माएनअ, बकलि, हेन-तेन कर बिचितरअ कलअरब। गहाइरे गाइ-बाछुर कर हांबा-हांबा डाक। घारेक भितरे एकटा लग निदाले रहत। राघब-ए-रे! चुना उठें-उठें। साउन मासेक बिहान। साला, किना निदे निदाल आहिस रे। एखनअ गंढ़र पिटिसला? हार जड़ेक गरू के परा झरा दिहन। एक दुइ पहर, एक हांठु कादा खेते घुरे हेतेइक। बिहाने एक धांउ गरू के छानि ना देले हेतउ? (चुना निद ले उठि के हाथ गड़ कसमसाइस, आर जरे हाहि करेइस)

चुना : (निदेक घारे) हं हे। दादु, तएं सुगुम रहे न। उठलाहंत। तएं मिछा मिछि बकर-बकर करिस ना।

राघाब: (रागएके जरे) साला। तहर किना रे। खाए पाउइसला न बेसिआम दुपहरे। हारेक गरू गिलाएं कि ना कादा खाता। तएं बेजाइन कढ़ि हेकिस रे। उठे। जा। परा-छानि देइहन।

चुना : हं, ह जांउला जे। (एधांउ आरअ एक बार हाहि करेइस)

राघब : बिहान हेलेइ! हार जड़ि लेगें। हाराडिहेक तिलअकेक हार टाउ कहल आहेइक। अके। हांकासिक। ना हले-चांड़े बाहरात निहिं। एक खढ़ि परअनेक खेत कादा करे हेतेइक। एक दुपहर तक कादा नि करले तके मारि मराबं। बेनिहर आहात बारह टि। बेनिहर जेसे बसि ना रहत। जानले न।

चुना : हं। ह। कतना आरअ बुझाबे। रा एकटा फिका खाए लेंउ। (सुखल सारेइपाते तामाक पात दे करि एकटा फिका बनालक चुनाए) दिआसलाइ जरि फस-फस फिका टानए। धुगां छाड़ले-छाड़ले उ चलल।

राघब : साला। फिका ले धुगां छाड़ेइस-जेसन रेल इनजिन लेक धुगां बाहराइक। मरबे कन दिन इ धुगां खाए के। (सुर बदलि के) ए टुनिक माएं। काहां गेले? (पुटि, गबर पानि देते देते ढुकलि)

पुंटि : काहे बिहाने बिहाने बकर-बकर करिहाला? कहा न किना हेलउन?

राघब : अ ह रे मकेइ बकर बकर करेइत के देखतला? बेनिहर ठिन एकधांउ जाएं। ना गेलेइ हेतउ? अखरे एखन तके चिनभअथु निहिं। काइल साइंझ बेराएं एक धाँउ कहल आहात। तखन त हं करला। एखन भिनसारे.........

पुंटि : (मुहेक काथा लुटि के) एखन बिहाने आर एक धांउ गड़े तेल दे हेतेइक त? उटा करम। जा, हँ।

राघब : सुधु-बिहान बेराए? आर एक धांउ बेसिआमें, बेनिहर बाहराए नि पारले दसर घार चलि जाता। तखन मुंह टा चाटबे। करबे एकाइ चास। मके खालि बकर-बकर करेइत के देखिस ला।

पुंटि : बिहान हेलेइक- तहरे मुंह हाथ धए के आउआ देखि। सभे हेतेइक। एसन गुइल करि भुललेइ कि काम हेइक? मकउ हारउआहाक जालाएं भात बसाए हेतेइक। कंहड़ा बाड़ि लेक एकटा कंहड़ा काटि आने तेइक (दम रागाए के) मर जाला त आर देखिहा निहिं? बेइरसाए भिंजल बर काठे कांदि-कदि रांधे हेइक। तखन कहले रइहन महुआ काठ गिला माँचाए उठाए देहाक। ता हले एखन

दारदाराए के सलगेइतेलेइक। भात-तिअन चाड़ेइ हेइतेलेइक। त न खालि बकर-बकर। मर मरन। कन बाटे सभड़ाहम?

राघब : (सुर नरम करि) अचछा छांडे, टुनिइ किना करेइस? अंए त काम करे पारेइतेलक। कांहा गेलि?

पुंटि : (आचकेइ गला धिमा करि के) हामर एकटि बेटि। बिहा हेल छमासेइ साइसेक जालाएं टेके नि पारलि। अकर बेजाइन मन खाराब। साइस पकलाहिञ दुइ आंइखे मर बेटि के देखेइ नि पारेइक टुनि के। ज़ामाइ टा मिनतुक बेजाइ बेस। कि गअ?

राघब : छाड़े एखन इ सउब काथा। अके एखन छाड़ि देंहि। हामर तागड़ा जुआन बेटा 'हारू' टा गेल काहां?

पुंटि : (ताउ दे करि) अंए त पढ़ा लिखा करेइस। तहरे निआर मखरि खुंटा धरि बाहरात न किना? हारूअ बिहाने कमरकस करए।

राघब : (हंसि-हंसि) धुर बुड़िह, तर उसरबे नि करउ! उटा कमरकस निहि। कसरत। देखसिक निहिं, बेटाक हामर पहलामान निआर गात। हारूञ लिखा-पढ़ा सिखअका, कसरत करअ का, अके एखन कनअ कहसिक ना। तबे आड़बेराएं खेत बाटे पाठासिक। (दुखेग संगे) मकउ टुनिक जालाएं बेजांइ माने कसट्अ हेइक, टुनिक मांए। तबे एखन किना करब, कहे। 'डाइन बुढ़ि, पाकल मुड़ि' अकर साइसेक घार आर नि पाठाबेइक। जबे तक बुढ़ि मर गड़े नि गिरति। बरनच्अ बेटिक सांघा देवेंइ। बेटि किना हामर छुता खापरा?

पुंटि : आछा देखिह न। जामाइए आर किना बेवसथा करतला जामाइ टा हामर बेस हेके।

राघब : हं! देखेंइला। आर एक मास हेलेइ गाउंऐक पांच भाइ के डाकि, मुखिया के धरि 'छाड़ पतरअ्' लिखाउबेइक। बुढिञ मके जानले नेखि।

पुंटि : मु धए के गाइ टिके दुहि दे। दुध त हेइकला निहि चाम बादड़ि

गाइ। चिमटालउ दुध बाहराइक निहि। एकटि बेस गाइ किनाहाक देखि।

राघब : डाहि-डुंगरिक सभे जमि चास हेइकला नहरेक पानित्र बा गरु चाराइएक जाएगा आर नि पाउआतेइक। गाइ-गरु बाढाबेसिन किना रकम?

पुंटि : चांडे-चांड़े मु धउआ। गाइ दुहाहाक। मए बेनिहर डाके जाहं। आए के चाए करम।

राघब : हं हं जांए। चांड़े खेत ना गेले साला चुनाए खांखड़ा गाड़हा पाले हार छाड़ि खांखड़ा धरे जात। हेदें कादा नि हेले बेनिहर डांड़ाए रहता सेटा खेआले नि करताक।

(दुइअ दुइ बाटे चलि जाता। परदा नाभतेइक)

दड़ि हुलकन (दुसरा दिरिस)

(गांउएक एकटा कलब घार)

कलब घार पास ले एकटा डहर। घारेक पाचेइरे टांगाल आहेइक एकटा मादेइर आर ढल। घारेक कनाए एकटा नागरा आर हारमोनियम। एक पासे कतेक टा कसरत करेक जिनिस पतरआ। हारूज दंड बैठक करेइस। आर ताकर पासेइ हाए टाटका करि देखेइत रहता अकर तिन संगिज-रमेस, बिन्दा आर मकरा। हारूक दंड-बैठक हेल बादे रिचिक खन हांफाए।

हारू : (हाथेक मसल फुलाए के) देखि हाला रे साला सउब मऱ मसल।

रमेस : देखु-देखु-धुर इटा किना मासुल बे। मंए हाटे लउआ कारला बेचे बसले, एकटा लाग आए के फटास करि टिकिस काटए, आर हाथे दे करि कहए-दे मासुल। मंए दस पएसा दे देंइ। सेइ टा न मासुल आर इटा......... धुर किना जे कहिस?

हारू : तंए एकटा निड़ा मुरूख-मसल आर मासुल एक हेलेइक? इटाक माने हाथेक 'मासपेसि'।

रमेस : (मुंड़ खुजिआए के) माझे-माझे किना काथा जे कहिस बुझेइ नि पारअं।

बिन्दा : हे हारू एकटा नाउआ मादेइर आनले आहं, देखिसला।

हारू : हं, हामरे माझे-माझे नाच बजना करिह। बुढ़ा पुरखाक चलाए आउअल रित-रिआज छाड़े त पारिह निहिं।

मकरा : मादेइर टा एकरिचिक बाजाम?

हारू : बाजाएं। हें रे हामर इ समइए कन परब हेइक?

रमेस : एखन त चासेक समइ। आसाड़ मासे आर किना परब हेतेइक। तबे भादर मासे करम-जाउआ ईद परब।

हारू : धुर जाउआ टा त बेटिछउआक परब।

बिन्दा : करमेक पांता नाचेक काथा भुलि गेले। गटा राइत नाच हेइक।

हारू : ताकर बादे किना परब?

मकरा : बांदना परब।

हारू : हं माइरि बांदना। बांदनाक नाच गान मके बेजांइ बेस लागेइक। हामर बांदना आर सांउतालेक सेहरेइ। लेंगे बांदनाक एक रिचिक नाच गान हेउक। आहा डहरउआ नाच गान कतेक बेस। भेरि गुड लागाउआ।

रमेस : किना कहले भेलि गुड़। इठिन काहां पाउबे?

हारू : रा देखि रमसा। तके, माने बुझाए मर चोदह पुरूसउ नि पारबउथु। धर मकरा मादेइर। हामरे तिन झन नाचब। सभ काए गित धरत-"इ बाड़ि कर झिंगा लत, हाउ बाड़ि के जाए, बड़े घारेक बहु बेटि झिंगा चराए खाए।"

(रिचिक देरि नाच हेल बादेइ रमेसेक नेजेइर डहर बाटे गेलेइक, आर नाच थुम करि जरे डाकलेइक)

रमेस : ए महना काका, सुने! हेदे आउ।

(महना कर बहु कालिदासिउ आउलि)

महना : किना कहिहाला रे। डहर लेके सुनलं तहरे त आसाड़ मासेइ बांदना के लुचकाए देल आइहाक।

रमेस : तके जे छेतनि बुनि के आनबे कहले रहं, किना हेलउ? गहाइर टा गिरल आहेइक टेका देबेंइ, झिंटासे गरू गिला भिंजत ला। पएसा देल बादे तहरे के देखा पाना दाए। किना कहिस ला? देबे न निहिं?

महना : हं रे बाछा देबां। हिंदे खाएक नि पाउंला। दुइ दिनेक झेइड़े उपासे दिन काटालेइक।

हारू : त हिंदे काहां गेल रहिस?

महना : परधानेक आपिसे गेल रहं, खाएक जगाडेक धांधाए। परधाने कहलाक–कनअ नि देबां। मए। हेकं फकिर डमेक बेटा। चाटाइए हागले कि जमे छाड़े, न डमे छाड़े? धाड़ाम करि परधानेक पासे लामबा करि गिरि गेलं। मर गात टाक आधा दुइआइरेक इ पासे आर अधेक उ पासे। कंहलेंइ। दे हुजर पांच किलो गहूंम आर एकटा धति।

कालि : मएंअ हेकं जेधि डमेक बेटि। कुदि जाए परधान बाबुक गड़ के सांपेक लेखेर दुइओ हाथ जड़अ करि धरलेंइ आर मुड़ टा ठगास करि ठेगाए देलेञ। कहलेञ–हुजुर झेइड़ बादेइरे उपासे मरिहला, न गड़ छउआ पुताक संगे। एहे एक कुड़ि बारह बछरेइ हेला न गड़ छउआ पूता। काहां जाप बाप? दुखे, बिपदे? तहराइ त गरिबेक (भुखा–दुखाक) मांए–बाप। दे पांच किलो गहुम आरे एकटा साड़ि। देखा न बेटिछउआ हे करि तराक निआर हांठुक उपरे लुगा पिंधल आहं। आर पेट टा फाकार–फुकुर करेइक ला।

महना : आर हेइ बाटे मंए मरल निआर आंह। कालिदासि परधानेक गड़ धरि राखले आहेइक। परधान बाबु फट ले उठल। हांक देलेइक – मधु बाबु, मधु बाबु। मधु बाबु आउअल आर अके कहलेइक देहइन जा एखरा जा खजहत नि हले मके माथा खाराब करता। आर तखन मंए मुचुर–मुचुर हांसउलां।

हारू : ताकर बादे किना हेलउ?

महना : एहे देखे तिन किलो गेहूं आर धति।

कालि : एहे देखे न तिन किलो गेहूं। आर एकटा साड़ि।

महना : काथाए आहेइक। चिल नाभले जबरा हलउ लेताक। आर मंए कहं! डम गेले मुठा हलउ लेताकेइ।

हारू : तहर कए टा छउआ कहलेहेन?

महना : न टा।

हारू : किना किना नाम अखर

महना : काहां पाबे बाप अतना नाम? सुरूञ नाम देलेइन मसलाक नाम, जिरा धनिआ, मेथि, मरिच, पोस्ता।

कालि : ताकर बादेउ नाम खाजि पाइह निहि। मंए बुइध करि नाम देलेइन झिंगा, मुला, कंहड़ा, छुटु टाक चेहरा एक बारेइ कुंदरिक निआर अहेइक से माहान नाम देलेइं कुंदरि।

बिन्दा : बाह-बाह तहरे डमेक नाम जागाबेहेन।

हारू : साबास! साबास! एखन आखिर नाच टा हेउक।

रमेस : महना खुडांए ता हले ढल टा धरअ।

महना : हं धरअहं। हं तबे तहरे त हामर पेशा धर्म मारि देले हे। बिहा घारे डमेक बाजाना ना हले बिहा हेइत नि रहेइक। एखन माइक आर बेंडक बाजना आनिहाला। हामर मरन। आर खांचि, डाला, टुपा, बाढ़िन बुनलउ मुल नि घुरेइक। आर बेचाइकउ निहिं। साला डमेक जाइत धर्म सिरालेइक। एखन हामरे डाइर छाड़ा बांदर निआर हेल आइह। हामरे भिखारि हे जाइहला। ढाक बाजनाएं अस्ताद डमं। एखन सिआर कुकुर निआर मरिहला हरदम।

रमेस : बाजाबे न सुधु लेकचर करबे?

कालि : बाजाउ न काहे बकर-बकर करिहा?

(महना डमे ढल धरए, बिंदाए मादेर आर मकरा आर हारू नाचे लागला। एबार मकराए गित धरए)

काहां हाराले कान्हु, झिरि हिरि बांसिया,

काहां हाराले धेनु गाय?

फुंकइते हाराए कान्हु झिरिहिरि बांसिया
चरइते हाराए धेनु गाय।

(दु मिनिट नाच हेल बादेइ परदा नाभेइक)

तृतीय हुलकन (तिसरा दिरिस)

(राघबेव रांधा घार)

रांधा घारे कहंड़ा, पुत्र तरकारिक बास आर छांग-छंग बासन बरतनेक राखा ठन-ठन साड़ा। रांधा घार ले पुंटिबालाक चिचिआबाड़।

पुंटि : अ टुनि! कांहां गेले? जाजा बेनिहर बाहराएक बेरा हेलेइक, किना करिसला?

छुमुर छुमुर गड़ेक आवाज दे (टुनिक हिड़कन) टुनि ढुकलि। उमेइर 18 बछर मुंहे टक खाउआक चटास-चटास सबदआ।

टुनि : हं ग माए जाहं। तएं। भात टा रांधे न। मंए बेनिहर बाहराए घुरि आउअहं।

पुंटि : अ ह तएं मर आचार टा सिराए देबे लअ। देख न तके मजा देखाउअलां। एक मुका ना मारले जाति निहिं।

(पुंटि के ताड़लेइ छुमुर छुमुर शब्द करि खिल खिलाए) हांसले हांसले पाराय। धुरेक लेक चेंचाए कहेइक-)

टुनि : मंए बेनिहर बाहराए जाहं गअ। (टुनिक जाउआ)

(मिनतुक एक मिनिटिक बादेइ सेइ छुमुर छुमुर साड़ा आउअलेइक। मंचे ढुकल बादेह हांपफते रहति)

पुंटि : आ ह हा। आदाड़ बेइचकाक निआर इडकिसला किना लाए लअ? जाते जाते घुरि आउले काहे?

टुनि : तअ मंए किना जानअ। देख न। बाहरांए न। कन आउएइस देखिहं न।

(एसन समइए एक लगेग प्रवेश)

पुंटि : अ बाप गअ! जामाइ आउअला। (घुघटां टानि) तएं कहबे तअ। अ टुनि लुकाइसला काहां? जामाइ के पानि दिहन। चा बनाए देइहन। (जामाइ के) ए गअ तरा बसा। हामरा बेनिहर गिलाइन के कहि आइह। जामाइ के पानि देइहन आर चा करि देइहन टुनि।

(पुंटिबाला क जाउआ) जामाइ भितरे आउअल। टुनि के देल एकटा खाटिञ बसल। टुनिञन छुमुर छुमुर करि एक लोटा पानि जामाइक हाथे देलेइक

टुनि : ले गड़ धउआ। केसे लेक मने हेलउन आइज?

जामाइ : तर काथा मके हमेसा मने पड़ेक टुनि। तर चांद मुंह टा देखेक तेहे मन आक बक करेइक। मांएक जालाए त इ अबसथा। तबे घटना हेले आहेइक।

टुनि : (आग्रह कर संगे) किना हेल आहेइक?

जामाइ : आउ न! सुने न! पास बाटे आउ। तबे ने कहबं।

टुनि : उटा हेतेइक निहि। मंए पासे जाम निहिं। एखनेइ मांए आउति। केउ जदि छुट करि ढुकि गेला त?

जामाइ : (फुस-फुस करि) अ! टुनि आउएं न। केउ आउअता निहिं। खुब बेस काथा हेकेइक।

टुनि : (चाइरअ बाटे दिखि आए के)- ना बाबा जाम निहिं।

जामाइ : जखन निए आउबे तखन फाराक लेइ सुने माएक दम डांड़ा दुखा धरले आहेइक। बुढ़ि दिन-राइत कहरेइस आर कहेहइस-"हे भगबान!

कबे जे किना कहलेञ बहु के जे मने राखले आहि। मंए मरि जाम। जा बेटा महेंद्र, जा बहु के ले आनिहिं। मंए पारले, मंऐ समधि -समधिन ठिन जाइतं। मिनतुक जाम केसे मंए लड़े-चड़ेइ नि पारअंला। मंए कहेइतेलेञ, चाल बहु तर छाड़ा मर दुनिआ आधांर।

(एखन इ सउब सुनि टुनि धुरे रहे नि पारलि आर पास बाटे आउलि। छुमुर छुमुर सबद आउउएक। महेंद्रेक छातिञ पड़लि।)

टुनि : (आदरेक गलाए) मर त जाऐक मन हेइक। तहर काथाउ सउब समए मने मड़ेइक। मिनतुक बाप बेजांइ रागि। जखन एक बार झागड़ा हेल आहेइक तखन कि सहजे छाड़ताक? (रूग्ण गलाए) बापे न आइजे मांए के कहेइत रहेइक, मके न कि दरकार हेले सांघा देताक।

महेंद्र : (दृढ़ कस्टे-कस्टे) देख टुनि! बाप के मंए निजेइ कहबेञ। तके मके दरकारेइ। तर जालाएं मंए काकउ नि डाराबेइन। बाप के गड़े धरि कहबेंइ, बाप मर मांए आसि (80) बछरेक बुढ़ि। अकर काथा छाड़ा। उ आर कतेक दिन। हामर काथा भाभा।

टुनि : हं बाप के कहबेसिक। मएँ तर छाड़ा बाचम निहिं।

(हटात बाहिरे खंखिक सबद। पुंटिबालाक परदाक आड़ाले चित्कार हे रे छागेइर गिलिन के एखनअ ले नि छालाहन-मे मे करि गुइल लागात ला। छागेइर चारवाहा टा गेल कांहां?)

टुनि : (फिस-फिस करि) छाड़ा छाड़ा मांए आउएइस।

(पुंटिबालाक प्रवेश)

पुंटि : हे गअ जामाइ! एखन लेक गड़ धलेहेन निहिं। हें रे टुनि जामाइ के चाउअ देलसिन निहिं? बेस! माइ! तंए जा चा करें।

(हारूक प्रवेश)

हारू : मांए गअ भात दे। बेरा हेलि। क्लब ले बेआम करि आएक आइज एक रिचिक देरि हेलेइक। इसकुल जाम। दे भात दे। (आचकेइ महेंद्र

के देखि डेगि उठल) वाह-वाह भाटु आउअल आहे। मांए गउ आइज आर मंए इसकुल जाम निहिं। आइज एखनेइ सांढ़ा मारिहिं। दु पहरेक खाउआ टा जमतेइक बेस।

पुंटि : किना कहले हारू? लानच, लानच किना रे।

हारू : लानच हेइक एगरेजि काथा। माने दुपरहेक खाउआ। तंए उ सब बुझवे निहिं।

पुंटि : त बाप! इंजिरि काथा ना कहलेइ पारिस। इंजिरि काथा कहले मर मने हेइक माएनअ गिलिने चेंचेर भेंचेर करहत।

(सभे हाहा करि हांसि उठला)

पुंटि : साइझ बेराए जामिने जाइस। तर बाप गटा दिन अकल-विकल हेइस। नि गेले घार आए के रपटअतउ। तिरिंग रिंगा देखा करा तउ। मंए त संभडाए नि पारबेंइ।

हारू : ठिक आइहेक मदर। जाम। एखन मर जिभे पानि आउअल आहेइक। बांधल लाल सांढ़ा टाके मराए एखन पुदगेंइला। भुखे मर पेटेक कुकुर छउआ गिला कुञ-कुञ चुञ-चुञ करहत। मिछा कहं निहिं। सुन दिदि सुन।

(हारू टुनिक पास जाए पेट टा देखाए।
सभे हांसे लागत। परदा नाभेइक)

चतुर्थ हुलकन (चउथा दिरिस)

(राघवेक रपा खेत)

दुपहर बेरा। हार गरू घार घुरि गेल आहेइक। सुधा बेनिहर ला रपा कामे रतअ रहता। पांच टि बेनिहरेक दलेक नेता 'डमनि' अकर आंचर डांड़ाए बांधा। गाते हांथे हिंआ हुआ कादाक छिटा। अखरा जलतरंग निआर हांसि उठत।

राघब : एरे डमनि हाथ चालाएं। एतना धिरे काम करले चलेइक? आगे एकटि कामिनिं एक खड़िक परनेक बिंड़ा उखनाइत रहि। एखन तहरे आधेक बिड़ाउ नि उठाल आइह। एसन काम चरनि हेले हेतेइक।

डमनि : (रागे) ए बुढ़ा तर घारे आर इ बार लेक कामे नि आउअप। हाथ चलाइहला न बसि रहल आइह, कहें न देखि?

बेनिहर : ए ल डमनि रागे हिसला काहे। आजा बुढ़ा टांए एक रिचिक गुइल करले किना हेतेइक, हामरे के बेंजाइ बेस मानए। तएं त बेस गितकाए पारिस। गित बनाए पारिस। बनाएं बनाएं पांता नाचेक आड़ खेमटा गित गाए देंहि त बुढ़ा के। बुढ़ाक राग पानि हेतेइक।

बेनिहर : (सउंताल बेनिहर) हामरेक आर सेरेंग (गीत) गांउएक खमता नेखे ना हले गातलं। कहिञ न तहरेक पांता नाचेक आड़ खेमटा चले

देउआ। (सभे बेनिहर खिल खिल करि हांसि उठत) डमनिञ गित धरलाक -

चास कइरते आलि दादु धबा घाटेर तले

कादार भितर दादु हामदेर सिगिर बिगिर चले

अ कादा करबि कखन

अ बिंड़ा छिटबि कखन

बेला गेलअ रे दादु रपा सिराबो कखन।

(तृतीय बेनिहर मुंहे मादेइरेक सबदे ताल देइक-)
उर-धातिड.-धअ धिताड.-ता धातिन-ध तेरे केटे धाकिरि धा।
(बाजाना क सेसे एधांउ आरसभेक हांसि)
(एसन समइए आर एकटा कंका सरेनेक प्रवेश)

कंका : कि ह राघब दादा। खेत टांए पांता नाचेक आखड़ा जमाए दे आहा।

राघब : (हांसि-हांसि) कन कंका भाइ, आउ, आउ इ बाटे। इ ढेमनि दगलि गिलिने दादु बुढ़ा कहि-कहि बुढ़ा बनाए देला। एखनअ देखा न तहर निआर पांच टि जुआन छांड़ि के कामिन खाटाए पारअहनला न निहिं? तबे बुढ़ा हेलं किना निआर। कंका भाइ कहें न देखि।

डमनि : (खिट-खिट हंसे) बुढ़ाक रस हले टघरेइकला बाबु।

राघब : काहे! हामरेकउ छकडाड भाभा न।

डमनि : छकड़ि गिलिने छकड़ाइ खजबेथिन। तर छकड़ा हेवा बेजाञ साध। हें दादु। कुंजड़ा लग कि आर चित हे सुते पारता।

बेनिहारिन: बकलिञ किना थाराएं भात खाए पारति?

राघब : आछा छकड़ि सउब। तहरे छकड़ा खजि मरा। एखन खमा करा। अरे अ मदना बिड़ा छिंटि दिंहन। जा छड़िरा खेते नाभा। आउ कंका भाइ। आउ आइड़े बसिह। रिचिक फिका खाए लिह।

(राघबे सारेइ पात चिरि, फिका बनाए कंका के देइक कंकाए फिका बनाए। पासेइ बरेक आइगे फुंकि-फुंकि

फिका धराए आर फस-फस करि फिका टानए कंकाए।)

राघब : आछा कंका भाइ-देख हामर खेतेक पांच एकड़ जमिने जे एक एकड़ जमिन खिल रहलेइक काहे जानिस?

कंका : आह उटा तएं जानिस निहिं। उटा मानकि साहेबेक खास बाहरालेइक, आर लखिन कामार के पाटा देलेइक। साला कामारे किना चास करताक? सात पुरुसे कनअ दिन चास करलाहात।

राघब : देख कंका भाई जाइतेक लेके कनअ कहिस न कहा उचित ना लागेइक। कामार, सांउताल, डम एखरउत लग। तबे एखरा चास छाड़ि आन पेसाक लग। मिनतुक कनऊ दिन चास नि करलाक कहि चास नि करे पारताक इटा कहा एक बारेइ भूल। तबे सरकारे एखरा के हार, गरू, बिहन, सार सउब देइन मिनतुक चास करला न निहिं, उटा आर देखेइन निहिं। खज खबर तक लेइन निहिं। दे हेइक। देइन। एखर जालाएं भालअ बासा नेखेइक।

कंका : हं ठिके कहताहा। बाबु सउबे दे देनला हलेइ, खालास आर घुइर के नि देखबंए।

राघब : तरवन अखरा पेटेक जालाएं सउब बेचि देथिक सार, बिहन, हार, गरू। दुइ-चार लग चासि बाहराता ठिके जदि सार, गरू, बिहन, देल बादे। तदारक करले। मिनतुक कने काकर देखेइस? टाका दे चाप देले सउब हेइक। काहे न 'साधे कहाइक बाप, पेआदांए काहाइक बाप।'

कंका : ठिकेइ कहताहा।

राघब : ता हले इ निआर कतना निआर खास जमी खिल रहलेइक। कतना धान हेइ तेइक। सउब सिरालेइक। गरिब देसेक मुखा लगेक आहार जुटतेइक किनानिआर?

कंका : हेदें कहतहएं चास बेस के बेसि करा। आर उ बाटे जमिन खिलेइ रहतेहे।

राघब : ठिक कहले भाइ। आर सरकारे जे अरा के सार, बिज देइन सेटाउ

समइए पाउआ जाइक निहिं। से कहत न–''बिहा पार हेल बादे छामड़ए नाच।'

कंका : दादा तएं पाटि करले, बेस करतिस। बड़े बड़े बाबु गिलिन के बेस बुझाए पारतिस। ना दादा–जा तहं, बेटा के हार टा धराए आए आहं। का करअ तेहे का जाने।

राघब : हं जा! मएऊ देखं हेठेक आइड़ टाए माटि देक कतना बाकि आहेइक। आइड़ बेस ना हले कि आर खेत? काथाएं आहेइक 'चासि चिनहाए आइड़े आर तांति चिनहाए पाइड़े।'

(दुइअ झन उठि दुइ बाटे जात। परदा नाभेइक)

पंचम हुलकन (पांचवा दिरिस)

(राघवेक रपा खेत)

(नेपथ्य) चाइर बाटे ले बेनिहरेक आवाज, पानि कादाएं चलल निआर छप-छप सब्द सुनाइक। हार गरूक हुं ह सबद सुनाइक।

राघब : (स्वगत उदेश्ये) सभे चासिक हेठ बाटेक आइड़ टा जमि मालिकेक। ताहले हेठेक जमि मालिक बिरामें मर आइड़ टांए कदाइर चालाइस केसे देखि।

(राघब रागे रागे चलल)

(बिरामेक कदाइर धरि प्रवेश। उमेइर चालिस बेआलिस। ढांगा रगा पातला गात, कदाइर हाथे, सेंए काम करते रहताक)

(राघबेक बेगे बेगे प्रवेश)

(रागाए के) एरे बिराम, तएं मर आइड़ टाक माटि छांटिसला काहे? मंए त निजेइ छाटम। तएं जदि आइज रपा करेइतिस तचलेइतेलेइक।

बिराम : (रागाए के) इटाएं किना हेलेइक? तर आइड़ेक कादा एक चौका माटि मर खेत माझे सामाल आहेइक। जमि त तएं मर ढिपा खराब करि देले।

राघब : (रागाए के) देख विराम, मुं संभड़ाएके काथा कहबे। तर जमिक भितरेक माटि तएं उठाबे न कि मंए तर माझ खेतेक माटि उठाए जाम? तबे हं आइड़ हेठेंक माटि मएं सउब उठाए देबं। चुना आउअका भात खाए, आइजे माटि टा उठाउअम।

बिराम : (सिनियरेक साथे) माझे खेतेक माटि उठाबे निहिं? ता हले मएंअ आइड़ छाटम। तएं मके किना करबे? आउरे साला बुढ़ा इ बाटे-तर फुटानि देखाए देबं।

राघब : (प्रचंड उत्तेजित हे) तएं किना करबे चाल न। साला तके मर आइड़े कदाइर चटाए देबं निहिं। तर बे आइनि काम मानबं निहिं।

बिराम : (रागाए के कांपि कांपि चित्कार) साला आउ न, तके कदाइर पासा मारि मुड़ टा कादाएं जदि निगाडलं ता हले बापेक बेटा निहिं।

राघब : लेरे तर जे ताकत आहोउ कर। मएं जाइहं देखंह किना करबे।

(लिलकाए के) (राघब, बिराम बाटे आघुआले जाए)
(गुइल सुनि-बेनिहर, कंका, हारवाहा, कमिआ सभे हाजिर हेत)
(अखरा गुइल करि कहत-)

डमनि : जाइस ना दादु। उ साला बिराम बेजांइ रागि हेके मारतउ।

राघब : ना मंए जाम।

कंका : जाबे ना दादा। माइर कुटना सालाए माइर देइ।

(राघब बिरामेक पासे चलि जाए)
केउ कनअ बुझेक पेहिल बिरामे राघब के कदाइरे मुड़े चट देलेइक)

डमनि : (गुइल करि कांदेइस) अ मांए ग कदाइर टांए दादु के मारि देलेइक। कतना रकत।

बिराम : मर साला।

राघब : उह बाप रे। मरि गेलं रे....।

(कंका आर चुना कुदि पास हेला। विराम डांड़ाए रहल)

डमनि : चुना पेहिल दादु के उठाहिं। कादाए जे मुंह टा गाड़ाए जाइहेइक।

(कंका आर चुनाए राघब के धरि उठालेथिक)
(राघब-'ऊ मांए ग बाप गऊ करि कुंहरेइस')

डमनि : अ मांए गअ कतना रकत। पानि कादा रकते लाल हे गेलेइक। बुढ़ा दादुक हस निहिं रे।

(हटात हारू आर महेंद्र कर कुदले कुदले प्रवेश)
अखर ढुकल देखि बिराम धिरे धिरे पाराएक चेस्टा करए।

हारू : काहां पाराबे साला बिराम। तर जम हेकं मंए। बुढ़ा टाके मारेइत के रिचिकअ लाज नि लागलउ तके? मके मारेइतिस ता हले बुझेइतेलं जे तएं कतना बड़े मरद हेकिस। तके छाड़बं कहिस ला न किना?

(बिरामके घेंचाए धरेइक) तर रकते आइज रपा खेतेक कादा मिंजाउअम।

बिराम : (कांदि-कांदि) छाड़ि दे। मरि जाम। अ बाप गअ मांए गअ घेंचा टा गेलेइक। जिवन टा गेलेइक।

हारू : (दांते-दांत चाबि) घेंचा टा सुगुम धरले आहं एखनो बेस के चिपं निहिं। एतने टांए इ अबसथा। तर गरम आइज बाहराबं।

महेंद्र : आर चिरा लुगा दे त लुगा बांधले रकत टा बंद हेतेइक। अतना बेसि लागेइक निहिं तबे दु-तिन टा सिलाइ कराए हेतेइक।

(पुंटिबाला अजुल-फुजुल हेके प्रवेश, संगे टुनि)

पुंटि : अ गऊ मर किना हेलेक गअ (कांदि कांदि)

टुनि : मर बाप के खाल भराएं मराए देलेइक। (कांदि कांदि)

हारू : महेंद्र-राहा न कादि हाला काहे? कनअ नि हेतेइक।

हारू : कंका काका, चुना, डमनि तहरे गवाहि इ सालाक नामे केस करम। ताकर पेहिल एक घुसा मारि दांत गिला झड़ाए देबेइ। मर बेआम करा गात टा इ बारे देखअका।

(हारू बिरामके घेंचाए धरेक। बिराम भं भं कांदे)

बिराम : (कनअ निआर मुह ले काथा बाहराइक) अ राघब काका मके बांचाउ। मर घेचा टा हारूञ चिपि राखले आहे (खक-खक आवाज) अ बाप ग मरि गेलंगह खांखड़ा निआर आंगुरे चिपि राखले आहे। छाड़ेइस निहिं तर गड़े गिरअहं। तरे छअआ हेकं खमां करे भुल हेलेइक। बांचाएं।

(हारूञ बिराम के छाड़ि देलेइ आर धाड़ाम करि राघबेक गड़े गिरल आर मुड़ घेसे लागेइस गड़े। थड़ेक देरि बादे राघबे काथा कहलाक)

राघब : ए हारू एके छाड़ि देहिं बाप। मर तेसन कनअ नि हेल आहेइक। दसिञ जखन दस मानि लेइस आहे, खमा खजेइस आहे तखन खमा करा टा सउब ले बड़े गुन बेटा। इ दुनिआ टांए खमा निहिं कहि त झागड़ा, मामला, मुकदमा, हिंसा, विवाद लागल आहेइक। जा बाप बिराम आर एसन काम कनअ दिन करिस ना।

बिराम : ए काका गड़े धरि तके कहंला जिबने आर कनअ दिन एसन काम करम निहिं। (घेंचा टांए हाथ घुराइस) बाप गअ हारू भाइएक हाथ टा लहाक हेकेइक। एसन चिपले रहे-बाप एखनअ तक दुखाइकला तबइ बेआम आर नाच गान कलबे-हं हामर छउआ टाकउ पाठबेंइ। अ मां ग एखनअ दुखाइकला।

राघब : मर मुड़ धरि कन बसल आहे?

महेंद्र : मएं हेकं बाप।

पुंटि : जामाइ हेके चिंहे नि पारसिकला?

महेंद्र : मर माएं आर बांचति निहिं। माएं तहर पास खमाक जालाएं पाठाल आहि। बहु के ले आने कहल आहि। अकर दसेक जालाएं मएं तहरे के गड़े धरअहन। माएं एखन निजेक भुल टा बुझले आहि। मिनतुक तहर पास आएक ताकत नेखेइक। (कांदि मुड़ गसा करि) माएं मर बांचति निहि।

राघब : खमा जखन खजले आहि तखन आर कनअ काथा नेखेइक बिरामेक

निआर तर मांए कउ खमा करलेइ। टुनिञ हामार बेस के जेसे संसार करअ इटा कन बापेक मने नि जागतेइक?

(आसते-आसते राघब उठि डांड़ाए खजए। तखन गिरे लागल न महेंद्रे झट करि धरि लेइका। सभेए हं हं संभड़ि के कहत)

राघब : ए बाप हारू बेरा डुबा हेलेइक। सभे घार चाला। मके एक रिचिक कांधे हाथ राखे दे ताहलेइ चले पारम। ताकर बादे हांसपाताल लेगबेहेन।

बिराम : ए काका, हारूञ काहे, मर कांधे हाथ राखे तके धरि धरि लेगबं।

(पुंटिबाला, महेंद्र, राघब, बिराम, चुना, हारू आर कंका धिरे-धिरे प्रस्थान। केबल बेनिहहरेक दल आर टुनि पेछुञ पेछुञ)

डमनि : ए गे टुनि रिचिक हांसे न। ससुर घार जाबे। तिरि-पुरुसे संसार करबेहे। तके चुंबा खताउ आदर करतउ।

(सभे खिल-खिल करि हांसि उठत। टुनिञ लाजे हेके डमनि के पिठे एक मुका देइक)

टुनि : (खुसीक रागे) डमनि तर मुंह टा बेजाञ खाराब। तर नाम डमनि नाम ना हेकरि किना नाम उचित रहउ जानिस?

सभे काइ : किना नाम उचित रहेइक?

टुनि : तर ना डमनि नाम हे करि ढेमनि उचित रहउ।

(सभे मिलि हांसि खुशि)

(धिरे-धिरे परदा गिरेलक)



ललित मोहन महतो

जन्म : 1938, पुखुरिया, झाड़ग्राम
शिक्षा : एम.ए.

पेशे से अध्यापक रहे ललित मोहन महतो स्कूली जीवन से ही साहित्य रचते रहे हैं। 'चासिक हाल' आपका पहला प्रकाशित नाटक है जो 1988 में प्रकाशित हुआ था। आपकी दूसरी प्रकाशित पुस्तक है 'जंगली फूल'। यह 1987 में छपी थी। इसके अतिरिक्त आपकी अनेक रचनाएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपती रही हैं तथा अपने प्रवाहपूर्ण लेखन से आपने समकालीन साहित्य को गहरे प्रभावित किया है। आपकी ओजपूर्ण लेखनी के कारण ही महाश्वेता देवी ने लोधा शबर जाति को अपने अध्ययन का विषय बनाया और उस पर महत्वपूर्ण कार्य किया। हावड़ा के देवी राय एवं शंकर सान्याल जैसे साहित्यकार भी आपकी लेखनी के कायल रहे हैं। आप 1998 में सेवानिवृत हुए और इन दिनों साहित्य साधना में रत हैं।



डॉ. वृंदावन महतो

जन्म : 17 जनवरी, 1958
बादला (तमाड़), रांची (झारखंड)
शिक्षा : एम.ए., पीएच. डी.

कुड़मालि भाषा-साहित्य में डॉ. वृंदावन महतो एक सुपरिचित नाम है। कुड़मालि शिष्ट साहित्य के विकास के लिए आप पिछले दो दशकों से भी अधिक समय से लगातार सक्रिय हैं। अपने लेखों तथा सृजनात्मक गद्य साहित्य के लेखन से आपने कुड़मालि साहित्य को समृद्ध तो किया ही है, उसे एक वैचारिक आवेग भी प्रदान किया है। फिलहाल आप रांची विश्वविद्यालय के मारवाड़ी कॉलेज, रांची में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के अध्यक्ष हैं। कुड़मालि भाषा - साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए झारखंड स्वायत्त परिषद् द्वारा 1995 में आप सम्मानित हो चुके हैं। कुड़मालि भाषा के उत्थान के लिए सी.आई.आई.एल., मैसूर एवं न्यू लिंग्विस्टीक सर्वे ऑफ इंडिया, भारत सरकार से जुड़कर आपने महत्वपूर्ण कार्य किया है तथा स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अब तक आपकी अनेक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।

PYARA FOUNDATION
प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातु, रांची-834009 झारखण्ड